सरल संस्कृत शिक्षक

भाग ३

(हिन्दी)

भारतीय विद्या भवन द्वारा संचालित
(सरल संस्कृत परीक्षा विभाग)

संपादक
जयन्तकृष्ण ह. दवे, मा. नियामक, भा. वि. भ.
महेशचन्द्र शास्त्री, विद्याभास्कर, परीक्षामन्त्री

मूल्य २.००

भारतीय विद्या भवन, चौपाटी पथ, बम्बई-७

सरल संस्कृत शिक्षक

[भाग ३]

'संस्कृत प्रवेश' परीक्षा के लिए निर्धारित

[द्वितीय प्रश्नपत्र]

प्रास्ताविकम्

'सरल संस्कृत शिक्षक' का तीसरा भाग 'संस्कृत प्रवेश' परीक्षा के द्वितीय प्रश्नपत्र के लिए पाठचपुस्तक के रूप में निर्धारित किया गया है।

इस भाग में 'इदम्' सर्वनाम के तीनों लिङ्गों के तथा 'कत', 'नदी' और 'राजन्' शब्द के रूप दिये गये हैं।

क्रियापदों के अज्ञार्थ के रूप, उपसर्गों का परिचय, ल्यबन्त-रूप तथा विध्यर्थ के रूप दिये गये हैं।

विसर्ग सन्धि का परिचय दिया गया है।

पुस्तक के अन्त में अंकित सुभाषितों तथा लोकोक्तियों को कण्ठस्थ करना आवश्यक है।

*

सरल संस्कृत शिक्षक

(भाग ३)

पाठ १

उद्यानम्

इदमुद्यानम् । उद्याने बालकाः क्रीडन्ति । बालकाः अत्र स्थित्वाल्पाहारमपि कुर्वन्ति । मनोहरं खलूद्यानमिदम् । अस्मिन् उद्याने वृक्षाः लताः च सन्ति । वृक्षेषु लतासु च स्थित्वा नानाविधाः विहगाः कोलाहलं कुर्वन्ति (कूजन्ति) । पश्य, तत्र काकाः, कुक्कुटाः, चटकाः च किमपि धान्यादिकं भक्षयन्ति । अत्र शुकः तिष्ठति । शुकस्य मधुरं रवं आकर्ण्य जनाः तं स्वगृहे पालयन्ति । तं च पञ्जराभ्यन्तरे स्थापयन्ति । पञ्जरस्थः शुकः मानुषसदृशीं वाचं वदति । एषः मयूरः । यदा वर्षासु घनाः गर्जन्ति तदा एषः नृत्यति । किं त्वया मयूरस्य नर्तनं दृष्टम् ?

कपोत-कोकिल-बक-हंस-कादम्बाः अस्मिन् उद्याने सर्वदैव श्रुतिमधुरं कूजन्ति । विशालं खलु उद्यानम् । अत्रैको विशालः तडागः अप्यस्ति । अस्मिन् जलाशये विविधाः जलचराः इतस्ततः सञ्चरन्ति । एकतः मकराः कच्छपाः मण्डूकाः च दृश्यन्ते ।

उद्यानस्यापरे विभागे अनेके पशवः सन्ति । सिंह-व्याघ्र-चित्रक-वृक-शृगाल-शम्बर-भल्ल-शूकरप्रभृतयः स्वे स्वे पञ्जरे तिष्ठन्ति । हरिण-शश-वानराणां स्थानं पृथगस्ति ।

अपरं चात्र यद् वयं पश्यामः तदस्ति पुष्पाणां सौन्दर्यम् । पुष्पेषु श्वेतपीतरक्तादिवर्णानां वैचित्र्यमस्ति । सेवन्तिका-जपा-यूथिका पुष्पाणामत्राधिक्यं वर्तते । पाटलास्तु न बहवः । चम्पक-

कर्णिकारमुद्गराः तु सर्वदा प्रफुल्लिताः सन्ति। इत्थमासमन्तात्सर्वथा नयनमनोहरमिदमुद्यानम्।

★

शब्दाः

१. **काकः**=कौआ	११. **सिंह**=सिंह
२. **शुकः**=तोता	१२. **व्याघ्रः**=बाघ
३. **कपोतः**=कबूतर	१३. **चित्रकः**=चीता
४. **कोकिलः**=कोयल	१४. **वृकः**=भेड़िया
५. **बकः**=बगुला	१५. **श्रृगालः**=गीदड़
६. **कादम्बः**=बतख	१६. **शम्बरः**=सांभर
७. **मत्स्यः**=मछली	१७. **भल्लः**=रींछ
८. **मकरः**=मगर	१८. **शूकरः**=सूअर
९. **कच्छपः, कूर्मः**=कछुआ	१९. **हरिणः, मृगः**=हिरन
१०. **मण्डूकः**=मेंढक	२०. **शशः**=खरगोश

संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए :-

वहाँ एक जंगल है। वह वहुत बड़ा है। वन का राजा शेर है। इसीलिए उसे वनराज कहते हैं। शेर माँस खाता है। यह जीभ से पाणी पीता है। जंगल में चीते, भेड़िये और रींछ भी रहते हैं।

हाथी पर राजा बैठता है। हाथी माँस नहीं खाता। हाथी धीरे-धीरे चलता है। परन्तु घोड़ा तेज दौड़ता है। सैनिक घोडों पर बैठते हैं। घोडों पर बैठकर वे युद्ध करते है। ऊँटों पर बैठकर युद्ध नहीं करते। ऊँट रेगिस्तान में चलते हैं। वे खूब पानी पीते हैं।

हिरन वड़ा सुन्दर प्राणी है। यह आश्रम में रहता है। ऋषिमुनि इसे अन्न खिलाते हैं।

इदम्=यह

पुल्लिग के रूप

अयम्	इमे	प्रथमा
इमम्, एनम्	इमान्, एनान्	द्वितीया
अनेन, एनेन	एभिः	तृतीया
अस्मै	एभ्यः	चतुर्थी
अस्मात्	एभ्यः	पंचमी
अस्य	एषाम्	षष्ठी
अस्मिन्	एषु	सप्तमी

इदम् शब्द के स्त्रीलिंग के रूप

इयम्	इमाः	प्रथमा
इमाम् , एनाम्	इमाः, एनाः	द्वितीया
अनया, एनया	आभिः	तृतीया
अस्यै	आभ्यः	चतुर्थी
अस्याः	आभ्यः	पंचमी
अस्याः	आसाम्	षष्ठी
अस्याम्	आसु	सप्तमी

इदम् शब्द के नपुंसक लिंग के रूप

इदम्	इमानि	प्रथमा
इदम्	इमानि	द्वितीया

शेष रूप पुल्लिग के समान चलेंगे।

★

पाठ २

संवादः

सुरेशः–अशोक, क्व गच्छसीदानीम् ?

अशोकः–आपणे गच्छामि। विलम्बः सञ्जातः सत्वरमेव कानि-चित् पण्यानि क्रीत्वा निवर्तयिष्यामि।

सुरेशः–किं कश्चिदुत्सवः अद्य तव गेहे ?

अशोकः–आम्। अद्य पितृपादानां जन्मदिनोत्सवः।

सुरेशः–किं वयः तव पितृचरणानाम् ?

अशोकः–पञ्चषष्ठिसमायुतं मम पितुर्वयः। अद्य मम गृहे बहवः सम्बन्धिनः मित्राणि च आगमिष्यन्ति। त्वयापि आगन्तव्यम्।

सुरेशः–भद्र, कतिवादने आगमिष्यन्ति जनाः ?

अशोकः–समयं किं पृच्छसि ? षड्वादनं यावत् आगच्छ।

सुरेशः–सार्धषड्वादनं यावत् आगच्छामि चेत् ?

अशोकः–नैव षड्वादनसमये एव निश्चितरूपेणागन्तव्यंत्वया।

सुरेशः–अस्तु, तर्हि गच्छ त्वं, नोचेत् विलम्बः भविष्यति।

अशोकः–(विपण्या प्रविशति वणिजमुपसृत्य वदति च) अयि वणिग्वर, कानिचित्, पण्यानि क्रेतुमागतः अहम्। देहि शीघ्र मह्यम्।

वणिक्‌ः–वत्स, त्वं किं किं क्रेतुमिच्छसि ? मम विपणौ बहूनि उत्तमोत्तमानि पण्यानि सन्ति तानि च स्वल्पमूल्यानि सन्ति। वद, कियत् परिमाणं किं क्रेतुमिच्छसि ?

अशोकः–सेरभारा शर्करा कियता मूल्येन विक्रीयते ?

वणिक्‌ः–नाधिकं मूल्यं, केवलमष्टाणकेन दास्यामि सेरभारां शर्कराम्।

अशोकः–तर्हि तोलयित्वा शीघ्रं सेरपरिमिता शर्करां देहि।

वणिक्‌ः–(शर्करां कर्गले संपुटीकृत्य) बाल, गृहाण शर्कराम्। देहि च मह्यमाणकाष्टकं सत्वरम्।

अशोकः–(आदाय हस्ते तस्य भारं चाल्पं विलोक्य) भो वणिक्, नैषा सेरभारा शर्करा दृश्यते। पुनः सम्यक् तोलयित्वा देहि।

वणिक्‌ः–(सहासम्) किमनेन। अकिञ्चित्करमेतत्। तव भारवहनक्लेशः अल्पः भविष्यति।

अशोकः–(मनसि किंचिद् विचार्याणकचतुष्टयं च तस्य पुरतः उपस्थाप्य) भोः श्रेष्ठिन् गृहाण मूल्यम्, मया हि गृहं शीघ्रं गन्तव्यम्।

(इत्युक्त्वा ततः चटुलया गत्या प्रस्थितः)

वणिक्‌ः–रे बालक, एहि एहि, श्रृणु, तावत्ः अल्पमेव मूल्यं दत्वा क्व व्रजसि ? आणकचतुष्टयमन्यदपि देहि।

अशोक:—श्रेष्ठिन्, किमनेन ; अकिञ्चित्करमेतत्। नाणकगणना-
क्लेश: ते अल्पीयान् भविष्यति।

(इत्युक्त्वा ततः जवेन पलायितः)

(विपणिस्थ: वञ्चक: वणिक् न किमपि कर्तुमशकत् केवलं तस्य मनसि पश्चात्ताप: एव आसीत्)

अशोक: गृहमागत्य सर्वमपि इतिवृत्तमकथयत्। तत्रस्था: सर्वे अपि बान्धवा: मित्राणि सर्वमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा च परमानन्दं प्रापु:। इत्थं जन्मोत्सव: सानन्दं समाप्तिं यात:।

शब्दा:

१. **कानिचित्**=कुछ
२. **पण्यानि**=बाजार की वस्तुएँ
३. **पञ्चषष्ठि:**=पैंसठ
४. **समः**=वर्ष
५. **विपणि:**=दुकान
६. **प्रविशति**=प्रवेश करता है
७. **उपसृत्य**=पास जाकर
८. **स्वल्पमूल्यानि**=सस्ती
९. **कियत्**=कितना
१०. **परिमाणम्**=परिमाण (वजन)
११. **सेरभारा**=एक सेर वजनकी
१२. **शर्करा**=शक्कर
१३. **कर्गलम्**=कागज
१४. **संपुटीकृत्य**=पुड़िया बाँधकर
१५. **आणक:**=आना
१६. **रूप्य:, रूप्यक:**=रुपया
१७. **आदाय**=लेकर
१८. **विलोक्य**=देखकर
१९. **अकिञ्चित्करम्**=कोई बात नहीं (क्षुद्र बात)
२०. **अल्पीयान्**=(कुछ) थोड़ा
२१. **जवेन**=वेग से

संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए :-

१. फलों की दुकान कहाँ है ? २. यहाँ फलों की दुकान नहीं है ? ३. इस बाजार में क्या-क्या वस्तुएँ मिलती हैं ? ४. यहाँ गुड, घी, शक्कर, धान्य आदि मिलता है। ५. उस दुकान में क्या बिकता है ? ६. यहाँ कपड़े बिकते हैं। ७. वह दुकानदार क्या बेचता है ? ८ वह तो घी बेचता है। ९. मुझे थोडा सा घी चाहिए। १०. तुम कितना घी चाहते हो ? ११. मुझे केवल एक सेर घी चाहिए। १२. इसके लिए पाँच रुपये देने चाहिए। १३. घी लेकर तू क्या करेगा ? १४. भोजन के साथ मैं खाना चाहता हूँ। १५. घी लेकर मुझे शीघ्र ही घर जाना है।

★

पाठ ३

क्रियापदानि

भू=होना

आज्ञार्थ के रूप

एकवचन	बहुवचन	
भवतु	भवन्तु	प्रथम पुरुष
भव	भवत	मध्यम पुरुष
भवानि	भवाम	उत्तम पुरुष

पत्=गिरना

पततु	पतन्तु	प्रथम पुरुष
पत	पतत	मध्यम पुरुष
पतानि	पताम	उत्तम पुरुष

पठ्=पढना

पठतु	पठन्तु	प्रथम पुरुष
पठ	पठत	मध्यम पुरुष
पठानि	पठाम	उत्तम पुरुष

वद्=बोलना

वदतु	वदन्तु	प्रथम पुरुष
वद	वदत	मध्यम पुरुष
वदानि	वदाम	उत्तम पुरुष

स्मृ=स्मरण करना।

स्मरतु	स्मरन्तु	प्रथम पुरुष
स्मर	स्मरत	मध्यम पुरुष
स्मरानि	स्मराम	उत्तम पुरुष

आज्ञार्थ के साथ इन रूपों का प्रयोग सत्कार, प्रश्न, प्रार्थना और आशीर्वाद अर्थ जानने के लिए भी होता है।

अन्य क्रियापदों के आज्ञार्थ रूप भी इसी प्रकार चलेंगे।

आज्ञार्थी क्रियापदों के प्रयोग इस प्रकार होंगे :–

१. अहं पठानि=मैं पढ़ूं।
२. त्वं पठ=तू पढ।
३. सः पठतु=वह पढे।

१. अहं वदानि=मैं बोलूं।
२. त्वं वद=तू बोल।
३. सः वदतु=वह बोले।

शब्दाः

१. रुह्=उगना
२ लुभ्=लोभ करना
३. वम्=कै करना
४. व्रज्=जाना
५. शंस्=स्तुति करना
६. श्लिष्=आलिंगन करना
७. सह्=सहना
८. हृ=हरण करना
९. ध्वंस्=नष्ट करना
१०. दध्=धारण करना

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

अथ कदाचित् दण्डकारण्ये लंकेश्वरस्य रावणस्य भगिनी शूर्पणखा देवोपमं रामं विलोक्य तत्रागता। तं रामं दृष्ट्वा सा राक्षसी काममोहिता वभूव विवाहार्थं च न्यवेदयत्। रामः च तां सहासमब्रवीत्–'अहं विवाहितः अस्मि। इयं मे भार्या सीता अतः मम भ्रातरं भज।' एतत् श्रुत्वा रामं विसृज्य राक्षसी लक्ष्मणं प्राप्ता। आगतां तां लक्ष्मणः अवोचत्–'कथं दासस्य मे भार्या भूत्वा त्वं दासी भवितुमिच्छसि? परवशः अहम्। मम भ्राता रामः एव त्वां योग्यः भविष्यति; गच्छ तं प्रति।' सा पुनः रामं गत्वावदत्–'तव भार्या एव भक्षयिष्यामि। निःसपत्नी भूत्वा त्वया सह चरिष्यामि।' तत् श्रुत्वा कुपितः रामः लक्षमणमब्रवीत्–'अनार्यैः कथञ्चन एव परिहासः नैव कार्यः। अलं परिहासेन।'

संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए :-

तव शूर्पणखा रावण से फिर बोली–'हे दशग्रीव, राम की पत्नी सीता वहुत सुन्दर है। वैसी स्त्री मैंने पहले कहीं भी नहीं देखी। जैसी सीता है वैसी देवी, यक्षी, गन्धर्वी और किन्नरी भी नहीं है। अतः वह तेरी भार्या होने योग्य है और तू उसके योग्य पति है।' यह सुनकर रावण मारीच के आश्रम में गया और बोला–'आप मेरी सहायता करें। आप सोने का हिरन बनकर पंचवटी में आ जावें। आपको देखकर राम आपके पीछे दौडेगा। तव मैं सीता को चुराऊँगा।'

शब्दाः

१. कदाचित्=किसी समय
२. देवोपमम्=देवता के समान
३. काममोहिता=काम से पीडित
४. बभूव=हुआ
५. भज=सेवन कर
६. परवशः=पराधीन
७. निःसपत्नी=सौतरहित
८. अलम्=बस
९. पुरा=पहले
१०. बलात्=जबरदस्ती
११. अयुक्ताचारः=दुराचार
१२. परुषः=कठोर
१३. त्वरमाणः=शीघ्रता करनेवाला
१४. कुलपांसः=कुलदूषक
१५. नाराचः=वाण
१६. सन्निभः=सदृश
१७. वन्य=जंगली
१८. कृताञ्जलिः=हाथ जोडे हुए
१९. कथञ्चन=किसी प्रकार भी
२०. प्रतिजग्राह=स्वीकार किया
२१. वरम्=ठीक, अच्छा

★

पाठ ४

उपसर्ग

धातु अर्थात् क्रियापद के पहिले आकर जो क्रिया का अर्थ बदल देते हैं, उन्हें **उपसर्ग** कहा जाता है।

कुल उपसर्गों की संख्या २२ हैं। वे क्रमशः इस प्रकार हैं :–

प्र, परा, अप्, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

इन उपसर्गों का अर्थ इस प्रकार है :–

१. **प्र**=अधिकता, उत्कर्ष	१२. **आ**=इस ओर
२. **परा**=उल्टा, विरुद्ध	१३. **नि**=खाली करना
३. **अप्**=दूर, वियोग	१४. **अधि**=ऊपर
४. **सम्**=एक होना	१५. **अपि**=आगे
५. **अनु**=अनुकूल, अनुसार	१६. **अति**=अतिशय
६. **अव**=नीचे	१७. **सु**=उत्तम
७. **निस्**=हीनता	१८. **उद्**=ऊपर, ऊँचा
८. **निर्**=हीनता	१९. **अभि**=सामने
९. **दुस्**=दुष्टता	२०. **प्रति**=उलटा होना
१०. **दुर्**=दुर्गति	२१. **परि**=सर्वत्र
११. **वि**=विशेष, विरोध, भिन्नता	२२. **उप**=समीप, अधिक

उपसर्गों से सम्वन्धित निम्नांकित श्लोक कण्ठस्थ कीजिए :-

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यः प्रतीयते।
प्रहाराहार संहार विहार परिहारवत्॥

अर्थ--उपसर्गों के योग से धातु का अर्थ अवश्य ही दूसरा हो जाता है। जैसे हार (हृ) क्रियापद से पूर्व प्र उपसर्ग लगने पर प्र+हार का अर्थ आक्रमण हो जाता है। आ+हार का अर्थ भोजन, सं+हार का अर्थ विनाश, वि+हार का अर्थ विहार, परि+हार का अर्थ निवारण हो जाता है।

भू धातु के साथ विभिन्न उपसर्ग लगने पर उसके अर्थ में जो-जो परिवर्तन हो जाते हैं, वे इस प्रकार हैं :-

भू =होना (भूत=हुआ) इसके रूप देखिए:-

प्र + भू=वढना (प्रभव=जन्म, प्रभाव=शक्ति, प्रभु:=स्वामी)

परा + भू=पराभव करना (पराभव=हार)

अप+भू=दूर रहना (अपभूति=पराजय, नाश)

सम्+भू=एक होना, जन्म ग्रहण करना (सम्भव=उत्पत्ति, सम्भूति=ऐक्य, उत्पत्ति)

अनु + भू=अनुभव करना (अनुभव=अनुभव)

वि + भू=वैभवयुक्त होना (विभव=धन, ऐश्वर्य)

अति + भू=सवसे अधिक वढना (अतिभवनम्=सवसे बड़ा होना)

उद् + भू=उत्पन्न होना (उद्भव=उत्पत्ति)

अभि + भू=पराभव करना (परिभव=पराभव)

परि + भू=पराभव करना (परिभव=पराभव, अपमान)

अवशिष्ट उपसर्ग प्रायः भू धातु के पीछे नहीं लगते। अन्य विभिन्न धातुओं को लगकर उनके रूप किस प्रकार बनते हैं, यह निम्नांकित उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगा :-

१. **बालिका परमेश्वरं अभ्यर्चति=बालिका ईश्वर की पूजा करती है।**

२. **अत्र स्थित्वा त्वं किमर्थमेवं आक्रोशसि ?=तू यहाँ खड़ा रह कर किसलिए इस प्रकार रो रहा है!**

३. **बालाः किमर्थं संक्रन्दन्ति तत्र? =लडकियाँ वहाँ किसलिए रो रही हैं?**

४. **छात्राः विद्यालयस्य क्रीडाङ्गणे संक्रीडन्ति=छात्र विद्यालय के मैदान में खूब खेल रहे हैं।**

५. **राजा अमात्यविषये विचिकित्सते=राजा मंत्री के विषय में सन्देह करता है।**

इस प्रकार धातुओं से पूर्व उपसर्ग लगकर उनका अर्थ बदल जाता है।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

वाल्मीकि नाम मुनिः अस्मिन् आश्रमे अवसत्। रमणीयः खलु आश्रमपदस्यायं परिसरः। एकदा देवर्षि नारदः अत्रागच्छत्। आगतं नारदं वाल्मीकिः विनयेनापृच्छत्–'देवर्षे! साम्प्रतं लोके को नु धर्मज्ञः, गुणैः भूषितः दृढव्रतः, सर्वभूतेषु च हितः? अहं तं महापुरुषं ज्ञातुम् इच्छामि। परं मे कुतूहलम्। त्वं हि प्रश्नस्यास्योत्तरं दातुं समर्थः।'

प्रीतः नारदः अब्रवीत्—'कोशलदेशे अयोध्या नाम नगरी अस्ति। तत्र दशरथः नाम राजा आसीत्। तस्य रामः नाम प्रियः पुत्रः। सः एव जनानां हिते रतः शुचिः साधुः विचक्षणः सर्वगुणोपेतः च अस्ति।'

नारदस्य तत् वचनं श्रुत्वा सन्तुष्टः वाल्मीकिः तं देवर्षिमपूजयत्। वाल्मीकिना संपूजितः नारदः देवलोकमगच्छत्। गते नारदे प्राज्ञः वाल्मीकिः रामचरितं पद्यरुपेण अरचयत्। तदेतदेव रामायणमिति प्रसिद्धं काव्यम्।

पाठ ५

शब्दाः

१. **अटवी**=जंगल
२. **कौमुदी**=चाँदनी
३. **आढकी**=अरहर की दाल
४. **असिपुत्री**=छुरी
५. **वाहिनी**=सेना
६. **अनीकिनी**=सेना
७. **कादम्बरी**=शराब
८. **कामिनी**=स्त्री
९. **नगरी**=शहर
१०. **कर्तरी**=कैंची
११. **काञ्ची**=तगडी (स्त्रियों का कटिभूषण)
१२. **स्तम्भः**=खम्भा
१३. **सम्भ्रम :**=घबराहट
१४. **सम्भावितः**=सम्मान किया हुआ
१५. **सम्भारः**=तैयारी
१६. **विषण्णः**=उदास
१७. **विविक्तः**=एकान्त
१८. **राजपथः**=राजमार्ग
१९. **मोघः**=व्यर्थ
२०. **मृगया**=शिकार
२१. **बाढम्**=अच्छा, ठीक
२२. **प्रहृष्टः**=प्रसन्न

ईकारान्त स्त्रीलिंग नदी शब्द के रूप

एकवचन	**बहुवचन**	
नदी	नद्यः	प्रथमा
नदीम्	नदीः	द्वितीया
नद्या	नदीभिः	तृतीया
नद्यै	नदीभ्यः	चतुर्थी
नद्याः	नदीभ्यः	पञ्चमी
नद्याः	नदीनाम्	षष्ठी
नद्याम्	नदीषु	सप्तमी
नदी	नद्यः	संबोधनम्

इसी प्रकार अन्य स्त्रीलिंग शब्दों के रूप चलेंगे ।

निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :–

१. आज मैं प्रसन्न हूँ। २. आज तो सभी प्रसन्न हैं। ३. क्या तू शिकार के लिए जंगल में जायेगा ? ४. मेरे साथ शिकार के लिए और कौन जायेगा ? ५. उस एकान्त जंगल में हम जायेंगे। ६. चाँदनी में वृक्ष पर बैठेंगे। ७. तू शिकार की तैयारी कर। ८. वहाँ सेना नहीं जायेगी। ९. यह नगरी बहुत बड़ी है। १०. तुम उदास क्यों हो ? ११. नदी के किनारे कौन बैठा है ? १२. आज चाँदनी में हम भी वहाँ बैठेंगे। १३. वह कौन नदी में स्नान करता है ? १४. भारत में अनेक नदियाँ हैं। १५. नदियों का जल मीठा होता है।

क्रियापदानि

(परस्मैपदी)

इष् (इच्छति) = इच्छा करना
पृच्छ् (पृच्छति) = पूछना
विश् (विशति) = प्रवेश करना
स्पृश् (स्पृशति) = स्पर्श करना
सृज् (सृजति) = बनाना

(आत्मनेपदी)

लज्ज् (लज्जते) = लज्जित होना
आदृ (आद्रियते) = आदर करना
धृ (ध्रियते) = धारण करना

(उभयपदी)

कृष् (**कृषति**, **कृषते**) = हल चलाना
क्षिप् (**क्षिपति**, **क्षिपते**) = फेंकना
तुद् (**तुदति**, **तुदते**) = दुखी होना
मुच् (**मुञ्चति**, **मुञ्चते**) = छोडना
दिश् (**दिशति**, **दिशते**) = कहना
नुद् (**नुदति**, **नुदते**) = प्रेरणा करना
मिल् (**मिलति**, **मिलते**) = मेल करना
लिप् (**लिम्पति**, **लिम्पते**) = लेपन करना
विद् (**विन्दति**, **विन्दते**) = प्राप्त होना
सिञ्च् (**सिञ्चति**, **सिञ्चते**) = सींचना

निम्नाङ्कित वाक्यों का मातृभाषा में अनुवाद कीजिए :-

१. अहं धनमिच्छामि । २. किं त्वं आणकचतुष्टयं इच्छसि ? ३. सः पाषाणं क्षिपति । ४. किमर्थं त्वं तुदसे ? ५. सः स्तेनं पाशात् मुञ्चति । ६. शिक्षकः बालकं प्रश्नं पृच्छति । ७. अहं त्वां कुशलं पृच्छामि । ८. उष्णं जलं स्पृशामि । ९. ईश्वरः विश्वं सृजति । १०. त्वं कस्मात् लज्जसे ? ११. रामः आम्रवृक्षं जलेन सिञ्चति । १२. वयं साफल्यं विन्दामः । १३. सः चन्दनेन ललाटं लिम्पते । १४. लता वृक्षेण मिलति । १५. त्वं सायंकाले क्व मिलिष्यसि ? १६. कृषकाः भूमिं कृषन्ति । १७. प्रथमं ग्रामस्य प्रधानः भूमिं कृषते, पश्चात् अन्ये कृषीवलाः कृषन्ते । १८. मेघाः आकाशात् जलं मुञ्चन्ति । १९. अहं धेनुं वने चारयितुं गोष्ठात् मुञ्चामि । २०. प्रह्लादः ध्यानेन परमं सुखं अविन्दत् । २१. विद्यया जनाः अमृतं विन्दन्ते । २२. सः उपवने पादपान् जलेन सिञ्चति ।

★

पाठ ६

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

एतत् कस्य गृहं वर्तते ? अस्मिन् गेहे के निवसन्ति ? अस्य गृहस्याधिपतिः किं व्यवसायः करोति ? किं रामकृष्णः गृहस्यास्य स्वामी ? नहि रामकृष्णस्य गृहम् अपरमस्ति । एतत्तु सदाशिवस्य गृहमस्ति । सदाशिवमहाशयः आंग्ल-महाविद्यालये प्राध्यापकः अस्ति । सः तत्र साहित्यविषयमध्यापयति । छात्राणामुपरि तस्य पितृवत् स्नेहः वर्तते । सः न कदापि छात्रेभ्यः क्रुध्यति । सः सदैव छात्रान् उपदिशति यत् छात्रावस्थायां एकाग्रचित्तेनाध्ययनं कर्तव्यम्, निद्रया कलहेन वा समयः न यापनीयः ।

शब्दाः

१. **अङ्गुलीयकम्** = अंगूठी
२. **कलेवरम्** = शरीर
३. **कटिः**, = **श्रोणिः** कमर
४. **जठरम्**, **उदरम्** = पेट
५. **उरः**, **वक्षः** = छाती
६. **स्कन्धः** = कन्धा
७. **पाणिः** = हाथ
८. **अंगुष्ठः** = अंगूठा
९. **पुनर्भवः**, **नखः** = नख
१०. **वितस्तिः** = बालिश्त (बारह अंगुली का नाप)
११. **प्रहस्तः**, **चपेटः** = चपत
१२. **ग्रीवा**, **कन्धरा** = गला
१३. **आननम्**, **वदनम्** = मुख
१४. **घ्राणम्**, **नासिका** = नाक
१५. **ओष्ठः**, **अधरः** = ओठ
१६. **रदनः**, **दशनः** = दाँत
१७. **रसना**, **जिह्वा** = जीभ
१८. **ललाटम्** = माथा
१९. **लोचनम्**, **नयनम्** = आँख
२०. **कर्णः**, **श्रोत्रम्** = कान

२१. **उत्तमांगम्, मस्तकः**=सिर	२६. हारः, **मुक्तावली**= मोती का हार
२२. **चिकुरः, केशः**=बाल	२७. **नूपुरः, मञ्जीरः**=बिछुए
२३. **अलकाः, चूर्णकुन्तलाः**= घुंघराले बाल	२८. **दुकूलम्**=दुपट्टा
२४. **कुण्डलम्**=कान के कुंडल	२९. **उद्वर्तनम्**=उबटन
२५. **ग्रैवेयकम्**=गले की माला	३०. **कङ्कतिका**=कंघी

निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:-

१. वह अंगूठी किसकी है? २. कृष्ण शरीर को सजाता है। ३. उसके पेट में दर्द है। ४. अनिल हाथ से भोजन बनाता है। ५. उसका कन्धा मजबूत है। ६. वह गले में दुपट्टा धारण करता है। ७. उनके मुख पर दुख नहीं है। ८. स्त्रियाँ नाक में गहने पहनती हैं। ९. उसके माथे पर चन्दन का तिलक है। १०. दाँतों के बीच जीभ रहती है। ११. वे घुंघराले बाल सुन्दर हैं। १२. मेरे पास गले की माला है। १३. क्या तू उबटन से स्नान करता है? १४. उस राजा के पास मोतियों का एक हार है। १५. मेरे पास हार नहीं है।

ऋकारान्त कर्तृ शब्द

कर्तृ=करनेवाला

एकवचन	**बहुवचन**	
कर्ता	कर्तारः	प्रथमा
कर्तारम्	कर्तॄन्	द्वितीया

कर्त्रा	कर्तृभिः	तृतीया
कर्त्रे	कर्तृभ्यः	चतुर्थी
कर्तुः	कर्तृभ्यः	पञ्चमी
कर्तुः	कर्तृणाम्	षष्ठी
कर्तरि	कर्तृषु	सप्तमी
कर्ताः	कर्तारः	सम्बोधनम्

ऋकारान्त पितृ शब्द

पिता	पितरः	प्रथमा
पितरम्	पितॄन्	द्वितीया

शेष विभक्तियों के रूप कर्तृ शब्द के समान ही चलेंगे।

निम्नांकित शब्दों के रूप भी कर्तृ शब्द के समान ही चलेंगे।

धातृ=धारण करनेवाला। दातृ=दाता। **वक्तृ**=वक्ता। **श्रोतृ**=श्रोता। **सवितृ**=सूर्य।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

१. एषा मदीया कंकतिका। २. अनया नार्यः केशान् भूषयन्ति। ३. त्वदीयं ग्रैवेयकं शोभनमस्ति। ४. उद्वर्तनं हि बालानां कृते हिताय। ५. नूपुराणां ध्वनिः मधुरो भवति। ६. नूपुरैः नार्यः पादशोभां वर्धयन्ति। ७. भिक्षुकः उदरं मोदकैः पूरयति। ८. सः स्कन्धे दुकूलं धारयति। ९. तस्यारुणम् ओष्ठं पश्य। १०. को नु कुण्डलं क्रीणाति?

क्रियापदानि

१. तृप् (तृप्यति) = तृप्त होना
२. तृष् (तृष्यति) = प्यास लगना
३. नश् (नश्यति) = नाश होना
४. पुष् (पुष्यति) = पुष्ट होना
५. शम् (शाम्यति) = शान्त होना
६. सीव् (सीव्यति) = सीना
७. ष्ठीव् (ष्ठीव्यति) = थूंकना
८. हृष् (हृष्यति) = हर्षित होना
९. युध् (युद्धयते) = लडना
१०. बुध् (बुध्यते) = जानना

वाक्यानि

दुग्धं पीत्वाहं न तृप्यामि। देवा: अर्घ्येण तृप्यन्तु। दुष्टजना: स्वयमेव नश्यन्ति। सज्जन: न नश्यति। स: मोदकान् भक्षयित्वा पुष्यति। स: घृतेन पुष्यति। सा वाला वस्त्राणि सीव्यति। शत्रव: परस्परं युद्धयन्ते। स: धनं प्राप्य हृष्यति। त्वं तां प्रतिमां दृष्ट्वा किमर्थं हृष्यसि? प्राणायामेन मन: शाम्यति। अत्र मा ष्ठीवतु।

★

पाठ ७

कृषिकर्म

गुरुः—कृषकः क्षेत्रेषु किं किं कर्म करोति ?

छात्रः—सः क्षेत्रे गत्वा प्रथमं तावत् हलेन कर्षणं करोति, कर्षयित्वा काशोत्पाटनं, तदनु बीजारोपणं करोति वृतिं च वध्नाति ।

गुरुः—सः वृषभाय किं ददाति ?

छात्रः—वृषभः कृषकस्य परमसहायकः; अतः सः तस्मै चूर्णी-तूल-शर्करा-खल्ली प्रभृति यथेच्छं ददाति । सः प्रतिदिनं घास-भारान् रचयित्वा आनयति ।

गुरुः—सायं समये सः किं करोति ?

छात्रः—सायंकाले सः निर्दलनं, क्षुरप्रणं, विचयं, त्रोटनादिकं च करोति । जलसेचनं सारणीप्रवन्धनं चापि सः सायंकाले करोति ।

गुरुः—कानि खलु सीताद्रव्याणि ?

छात्रः—अनेकानि द्रव्याणि सन्ति यथा प्राजनीः, कुठारः लवित्रं, खनित्रं, प्रावणादिकम् ।

गुरुः—कथं हि सः क्षेत्रस्य परिरक्षणं करोति ?

छात्रः—रात्रौ मञ्चे उपविश्य जागरणेन दिवा च क्षेत्रं परितः भ्रमणेन सशब्दं तस्करेभ्यः पशुभ्यः पक्षिभ्यश्च सः क्षेत्रस्य परिरक्षणं करोति ।

गुरुः—धन्यः खलु कृषकः यो हि विविधैः श्रमैः अस्मभ्यं धान्यं वस्त्रं च उत्पादयति ।

शब्दाः

१. हलः, लाङ्गुलः, शीरः = हल
२. काशोत्पाटनम् = घास उखाडना
३. बीजारोपणम् = बीज बोना
४. वृतिः = मेड
५. हालिकः = हलवाहा
६. औक्षकम् = बैलों का झुंड
७. चूर्णी = भूसा
८. तूलशर्करा = बिनौले
९. खल्ली = खली
१०. घासः = घास
११. निर्दलनम् = निराना
१२. क्षुरप्रणम् = खुरपी करना
१३. विचयः = चुनना
१४. त्रोटनम् = तोडना
१५. जलसेचनम् = सिंचाई करना
१६. प्राजनी = कोचनी
१७. सारणी-प्रबन्धनम् = नाली बनाना
१८. सीताद्रव्याणि = खेती के औजार
१९. कुठारः = कुल्हाडा
२०. लवित्रम् = हसिया
२१. खनित्रम् = कुदाली
२२. प्रावणम् = फावडा
२३. परिरक्षणम् = रखवाली करना
२४. जागरणम् = रात की रखवाली
२५. खगोद्वेजनम् = चिड़िया उडाना
२६. बध्नाति = बांधता है
२७. चौरः, तस्करः = चोर
२८. अभितः, परितः = चारों ओर

संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए :–

१. यह कुल्हाडा किसका है ? २. तुम फावडे से क्या करते हो ? ३. किसान खेत में सिंचाई करता है । ४. बैल घास चरता है । ५. वहाँ बैलों का झुंड है । ६. सुरेश खेत में चिड़िया उडाता है । ७. खेती के औजार कहाँ बिकते हैं ? ८. क्या बीज बोने में तू मेरी सहायता करेगा ? ९. बिनौले से गाय का दूध उत्तम होता है । १०. निराने के लिये तू मेरे साथ चल । ११. वह हर्षित होता है । १२. क्या तू हर्षित नहीं होता ? १३. वीर युद्धक्षेत्र में लड़ता है । १४. मैं सब जानता हूँ । १५. तू कुछ नहीं जानता ? १६. यहाँ पर क्यों थूकते हो ? १७. भोजन करके वह तृप्त होता है । १८. मुझे प्यास नहीं लगती । १९. क्या तुझे प्यास लगती है ? २०. परशुराम का क्रोध शान्त होता है ।

क्रियापदानि (ल्यबन्त रूप)

१. **प्रविश्य**=घुस कर	११. **अवतीर्य**=उतर कर
२. **परित्राय**=रक्षा कर	१२. **उत्थाय**=उठ कर
३. **आपृच्छ्य**=पूछ कर	१३. **उड्डीय**=उड कर
४. **परित्यज्य**=त्याग कर	१४. **निपीय**=पी कर
५. **संदिश्य**=निर्देश कर	१५. **प्रस्थाय**=प्रस्थान कर
६. **आरुह्य**=चढ कर	१६. **आगत्य**=आ कर
७. **विसृज्य**=छोड कर	१७. **अनुभूय**=अनुभव कर
८. **विमुह्य**=मोहित होकर	१८. **प्रतिज्ञाय**=प्रतिज्ञा कर
९. **विभज्य**=बाँट कर	१९. **प्रारभ्य**=प्रारम्भ कर
१०. **सन्तुष्य**=सन्तुष्ट होकर	

वाक्यानि

१. तं विसृज्य सः क्व गच्छति ? २. अहं गृहं विमुच्य वनं न गमिष्यामि । ३. मोदकान् विभज्य भक्षयन्तु । ४. इतः प्रस्थाय त्वं क्व गमिष्यसि ? ५. अश्वं आरुह्य सः मृगयार्थं गच्छति । ६. खगाः उड्डीय वृक्षेषु उपविशन्ति । ७. आपृच्छ्यैव गन्तव्यम् । ८. वीरः दुर्बलान् परित्राय कीर्तिम् अधिगच्छति । ९. अद्यारभ्य मासपर्यन्तं अशिक्षितान् अध्यापयिष्यामि । १०. दुःखानि अनुभूय नरः परमेश्वरं भजते । ११. सुपुत्रेषु गृहभारं निक्षिप्य जनाः सुखिनः भवन्ति । १२. सर्वान् धर्मान् परित्यज्य श्रीकृष्णं भज । १३. छात्राः पुस्तकानि आदाय विद्यालये गच्छन्ति । १४. दूताः वृत्तान्तमेवमवबुध्य अमात्यमकथयन् । १५. परमेश्वरं विस्मृत्य न कः अपि सुखं प्राप्तुं शक्नोति ।

क्रियापदानि

(विध्यर्थ के रूप)

भू=होना (परस्मैपद)

भवेत्	भवेयुः	प्रथम पुरुष
भवेः	भवेत	मध्यम पुरुष
भवेयम्	भवेम	उत्तम पुरुष

भाष्=बोलना (आत्मनेपद)

भाषेत	भाषेरन्	प्रथम पुरुष
भाषेथाः	भाषेध्वम्	मध्यम पुरुष
भाषेय	भाषेमहि	उत्तम पुरुष

अद्=खाना (परस्मैपद)

अद्यात्	अद्युः	प्रथम पुरुष
अद्याः	अद्यात	मध्यम पुरुष
अद्याम्	अद्याम	उत्तम पुरुष

आस्=बैठना (आत्मनेपद)

आसीत	आसीरन्	प्रथम पुरुष
आसीथा:	आसीध्वम्	मध्यम पुरुष
आसीय	आसीमहि	उत्तम पुरुष

दा=दान करना (परस्मैपद)

दद्यात्	दद्यु:	प्रथम पुरुष
दद्या:	दद्यात	मध्यम पुरुष
दद्याम्	दद्याम	उत्तम पुरुष

दा=दान करना (आत्मनेपद)

ददीत	ददीरन्	प्रथम पुरुष
ददीथा:	ददीध्वम्	मध्यम पुरुष
ददीय	ददीमहि	उत्तम पुरुष

*

पाठ ८

सीतायाः स्वयंवरः

जनकः उवाच—हे मुनिपुङ्गव, अत्रास्ति धनुः शंकरस्य। क्षेत्रं कृषतः मे लाङ्गुलादुत्थितैका सुता अस्ति। क्षेत्रं शोधयता सा लब्धा अतः सा सीता इति नाम्ना विश्रुता। सा इदानीं स्वयंबर-योग्या सञ्जाता। वर्धमानां तां सीतां सर्वे भूपतयः अत्रागत्य वरयितुमिच्छन्ति। वरयितुमिच्छतामपि तेषां कन्यां न ददामि यतो हि एषा पराक्रमस्याधिक्येनैव केनापि वरयितुं योग्यास्ति।

तेषां नरपतीनां पुरस्तात् मया शैवं धनुः उपाहृतम्। तस्य ग्रहणे तोलने अपि वा ते नृपाः असमर्थाः बभूवुः। तदेतत् परम-भास्वरं धनुः दाशरथये रामायापि दर्शयिष्यामि। यदि रामः अस्मिन् ज्यारोपणं कुर्यात् तर्हि अहं तस्मै सीतां प्रयच्छामि।

ततः जनकेन समादिष्टाः सचिवाः प्रयासेन तत्र धनुः आनयामासुः। महर्षेः वचनात् तत्र धनुः दृष्ट्वा रामः अब्रवीत्। इदं दिव्यं धनुः पाणिना संस्पृशामि। एतस्य तोलने पूरणे अपि च यत्नवान् भविष्यामि।

एवम् उक्त्वा रामः चापं मध्ये जग्राह लीलया पूरयामास च। यदा रामेण तस्मिन् मौर्वी आरोपिता तदा तत् धनुः बभञ्ज। प्राञ्जलिः राजा जनकः विश्वामित्रमुवाच—अत्यद्भुतमिदम्, अचिन्त्यमतर्कितं च। मम सुसुता सीता रामं भर्तारं प्राप्य कीर्ति-माहरिष्यति। मन्त्रिणः मे शीघ्रमयोध्यां गच्छन्तु राजानं दशरथं च सम्प्रार्थ्यात्र आनयन्तु।

ततः दशरथः मिथिलामुपेयिवान्। जनकः च अस्य पूजां कल्पयित्वा एनमुवाच–दिष्टया प्राप्तः असि सह वसिष्ठेन। ददामि सीतां रामाय उर्मिलां लक्ष्मणाय च। दशरथश्च तदाकर्ण्य सहर्षं उवाच–राजन्, सदृशः धर्मसम्बन्धः रामस्य सीतया सह लक्ष्मणस्य च उर्मिलया सह।

जनकः तु प्राञ्जलिः उवाच–धन्यं मन्ये मम कुलम्। ततः सर्वाभरणभूषितां सीतां समानीय, अग्नेः पुरस्तात् संस्थाप्य राजा राममब्रवीत्। इयं मे सुता सीता अद्यप्रभृति तव सहधर्मचारिणी, प्रतीच्छ एनां पतिव्रतां छायां इव अनुगामिनीम्। ततः सर्वे महर्षयः साधु साधु इति ऊचुः।

शब्दाः

१. **उवाच**=बोला
२. **मुनिपुङ्गवः**=मुनियों में श्रेष्ठ
३. **विश्रुत**=प्रसिद्ध
४. **वरयितुम्**=विवाह करने के लिए
५. **आनयामासुः**=ले आये
६. **बभञ्ज**=तोड दिया
७. **प्राञ्जलिः**=हाथ जोडकर
८. **उपेयिवान्**=आया
९. **अद्यप्रभृति**=आज से
१०. **प्रतीच्छ**=स्वीकार कर
११. **ऊचुः**=बोले
१२. **दिष्टया**=अहोभाग्य से
१३. **द्रष्टुकामः**=देखने की इच्छावाला
१४. **तेन**=इसलिए

★

पाठ ९

राजन्=राजा शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन	
राजा	राजानः	प्रथमा
राजानम्	राज्ञः	द्वितीया
राज्ञा	राजभिः	तृतीया
राज्ञे	राजभ्यः	चतुर्थी
राज्ञः	राजभ्यः	पञ्चमी
राज्ञः	राज्ञाम्	षष्ठी
राज्ञि, राजनि	राजसु	सप्तमी
राजन्	राजानः	सम्बोधनम्

विसर्गसन्धि

स्वरों के आगे जो: यह चिह्न लगता है, उसे विसर्ग कहते हैं।

विसर्ग सदा स्वरों के आगे ही आता है। इनमें अधिकतर परिवर्तन पहले स्वर के अनुसार ही होते हैं, अतः स्वरसन्धि के पश्चात् इस पर विचार किया जा रहा है।

स्मरणीयः—स्वर के पश्चात् तो स्वर आने पर ही सन्धि होती है; परन्तु विसर्ग के पश्चात् स्वर या व्यंजन दोनों में से किसी के भी आने पर सन्धि हो सकती है।

नियम १

अकार के बाद स्थित विसर्ग के सामने पुनः अकार अथवा मृदुव्यंजन आने पर उस विसर्ग का ओ होता है : जैसे :-

देव+गच्छति=देवो गच्छति ।

अश्वः+मृतः=अश्वो मृतः ।

नियम २

जव इकार या उकार के पश्चात् विसर्ग के सामने स्वर अथवा मृदुव्यंजन आता है तो विसर्ग का रकार (रेफ) वन जाता है। जैसे :-

भानुः+अस्ति=भानुरस्ति । हरिः+अब्रवीत्=हरिरब्रवीत् ।

विष्णुः+गच्छति=विष्णुर्गच्छति। कविः+लिखति=कविर्लिखति।

यदि मृदुव्यंजन न हो तो विसर्ग को रेफ नहीं होता।

जैसे :-

हरिः+करोति=हरिः करोति । गुरुः+पुनाति=गुरुः पुनाति ।

नियम ३

जव विसर्ग के आगे **च** या **छ** आता है तो उसका **श्** होता है। जैसे :-

रामः+चलति=रामश्चलति ।

जनः+छेदयति=जनश्छेदयति ।

मृदुव्यंजन——ग, घ, ङ; ज, झ, ञ; ड, ढ, ण; द, ध, न; ब, भ, म; य, र, ल, व; ह।

नियम ४

जब विसर्ग के आगे **त** अथवा **थ** वर्ण आता है तब उसका स् हो जाता है : जैसे :-

रामः+तिष्ठति = रामस्तिष्ठति। जनः+थूर्वति = जनस्थूर्वति।

नियम ५

जब विसर्ग के आगे **ट** अथवा **थ** आता है तो उसका **ष्** होता है। जैसे :-

रामः+टीकते = रामष्टीकते।

नियम ६

जब विसर्ग के आगे **श, ष, स** वर्ण आता है तो उसका क्रमशः ष्, श्, स् हो जाता है अथवा विसर्ग का विसर्ग ही कायम रहता है। जैसे :-

रामः+शास्ति = रामश्शास्ति, रामः शास्ति। जनः+ष्ठीवति = जनष्ठीवति, जनः ष्ठीवति। रामः+सदा = रामस्सदा, रामः सदा।

शब्दाः

१. **अग्रः** = आगे	४. **अनेकशः** = अनेक बार
२. **अजिनम्** = मृगछाला	५. **अधस्तात्** = नीचे
३. **अञ्जलि बद्ध्वा** = हाथ जोडकर	६. **अन्येद्युः, अपरेद्युः** = दूसरे दिन

७. **आधाय**=रखकर

८. **आपृच्छ्य**=छुट्टी लेकर, पूछकर

९. **आवृत्य**=ढांककर

१०. **आसाद्य**=प्राप्त करके

११. **उपागतः**=समीप पहुँचा

१२. **ऋते**=विना

१३. **कच्चित् न**=शायद ?

१४. **कथं नु**=कैसे ?

१५. **कालक्षेपः**=देरी

१६. **केनचित्**=किसी से

१७. **खलु**=सचमुच

१८. **ततः**=उसके बाद

१९. **तदाप्रभृति**=तबसे लेकर

२०. **न खलु**=शायद ?

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. आपृच्छय गन्तव्यम् । २. मम सेवकः अधस्तात् तिष्ठति । ३. भारमत्रैवाधाय विश्रामं कुरु । ४. अनेकशः धन्यवादान् तुभ्यं ददामि । ५. जनाः धनं आसाद्य सुखं प्राप्नुवन्ति । ६. ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः । ७. केनचित् उक्तः अहम् अत्रागतः । ८. तदाप्रभृति सः प्रतिदिनं पाठशालां गच्छति । ९. ततः सः भ्रमणाय उपवनं जगाम । १०. व्यर्थमेव सः कालक्षेपं करोति ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :–

१. आगे कौन जाता है ? २. क्या तू आगे नहीं जाता ? ३. वह मृगछाला पर बैठता है । ४. ऋषियों के आश्रम में हिरन दौड़ते हैं । ५. मैं दूसरे दिन जाऊँगा । ६. क्या तू नीचे नहीं जाता ? ७. मैं हाथ जोडकर प्रार्थना करता हूँ । ८. उसके बाद वह पानी पी कर चला गया । ९. मैं पूछ कर नहीं आया । १०. क्या तू पूछ कर यहाँ आया है ?

क्रियापदानि

(विध्यर्थ के रूप)

तुद्=कष्ट देना (परस्मैपद)

तुदेत्	तुदेयुः	प्रथम पुरुष
तुदेः	तुदेत	मध्यम पुरुष
तुदेयम्	तुदेम	उत्तम पुरुष

मृ=मरना (आत्मनेपद)

म्रियेत	म्रियेरन्	प्रथम पुरुष
म्रियेथाः	म्रियेध्वम्	मध्यम पुरुष
म्रियेय	म्रियेमहि	उत्तम पुरुष

रुध्=रोकना (परस्मैपद)

रुन्ध्यात्	रुन्ध्युः	प्रथम पुरुष
रुन्ध्याः	रुन्ध्यात	मध्यम पुरुष
रुन्ध्याम्	रुन्ध्याम	उत्तम पुरुष

(आत्मनेपद)

रुन्धीत	रुन्धीरन्	प्रथम पुरुष
रुन्धीथाः	रुन्धीध्वम्	मध्यम पुरुष
रुन्धीय	रुन्धीमहि	उत्तम पुरुष

कृ=करना (परस्मैपद)

कुर्यात्	कुर्युः	प्रथम पुरुष
कुर्याः	कुर्यात	मध्यम पुरुष
कुर्याम्	कुर्याम	उत्तम पुरुष

(आत्मनेपद)

कुर्वीत	कुर्वीरन्	प्रथम पुरुष
कुर्वीथाः	कुर्वीध्वम्	मध्यम पुरुष
कुर्वीय	कुर्वीमहि	उत्तम पुरुष

क्री = खरीदना (परस्मैपद)

क्रीणीयात्	क्रीणीयुः	प्रथम पुरुष
क्रीणीयाः	क्रीणीयात	मध्यम पुरुष
क्रीणीयाम्	क्रीणीयाम	उत्तम पुरुष

(आत्मनेपद)

क्रीणीत	क्रीणीरन्	प्रथम पुरुष
क्रीणीथाः	क्रीणीध्वम्	मध्यम पुरुष
क्रीणीय	क्रीणीमहि	उत्तम पुरुष

★

पाठ १०

संवादः

भोजनवेला

बालकः–अयि मातः, मां क्षुधा बाधते ।

माता–वत्स, प्रतीक्षस्व किंचित् । न सिद्धा रसवती ।

बालकः–किमर्थं विलम्बः सञ्जातः ? किमद्य किमपि वैशिष्ट्यमस्ति भोजने ?

माता–आम्, अद्य भोजने पूरिकाः मोदकाश्च सन्ति । किं न जानासि अद्य तव मातुलः समागतः ?

बालकः–एवम् ! तर्हि अद्य आकण्ठं भोजनं भविष्यति ।

माता–एहि आकारय च मातुलम् । सुसिद्धं सर्वमन्नम् उत्तिष्ठ भोजनार्थम् ।

बालकः–सः आगच्छति मातुलः । झटिति । परिवेषय । अद्य तु मातुलेन सह भोजनं करिष्यामि न तु एकाकी ।

माता–गृहाण एषा तव स्थाली; अपरा च एषा, तां निज देहि ।

बालकः–मातः शाकास्तु समीचीनाः सन्ति सूपादयः अपि शोभनाः सञ्जाताः ।

माता–शाकसूपादिकं वर्णयसि, कस्मान्न भक्षयसि मोदकान् ?

बालकः–मोदकेभ्यः शाकादि–तिक्तपदार्थेषु मे अधिकादरः । मातः, अद्यात्र समन्ततः रङ्गावली केन सुविन्यस्ता ?

माता–कान्या करिष्यति ? मयैव सर्वं कृतम्। किं जाते ते भोजनम् ?

बालकः–अद्य तु आतृप्ति भोजनं जातम् ?

माता–अस्तु तर्हि मुखं प्रक्षाल्य मातुलाय ताम्बूलं देहि।

शब्दाः

१. **प्रतीक्षस्व**=प्रतीक्षा कर
२. **सिद्धा**=तैयार हुई
३. **रसवती**=रसोई
४. **आकण्ठम्**=गले तक
५. **आकारय**=बुला
६. **उत्तिष्ठ**=उठो
७. **झटिति**=शीघ्र
८. **परिवेषय**=परोस
९. **एकाकी** =अकेला
१०. **स्थाली** =थाली
११. **समन्ततः**=चारों ओर, आसपास
१२. **रंगावली**=चित्रविचित्र रंगों के वेलबूटे
१३. **सुविन्यस्ता**=भली प्रकार निर्मित
१४. **जातम्**=हुआ
१५. **आतृप्ति**=तृप्ति होने तक
१६. **प्रक्षाल्य**=धोकर
१७. **यथेच्छम्**=इच्छानुसार
१८. **सूदः**= रसोइया
१९. **चमसः**, **चमसम्**=चमचा
२०. **चषकः**=प्याला

*

पाठ ११

सुभाषितानि

(१)

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति ।।

(२)

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता ।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ।।

(३)

दधि मधुरं मधु मधुरं द्राक्षा मधुरा सुधापि मधुरैव ।
तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम् ।।

(४)

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च ।
वञ्चनं चापमानं च मतिमान्न प्रकाशयेत् ।।

(५)

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ।।

(६)

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ।।

(७)

जीवन्तोऽपि मृताः पञ्च व्यासेन परिकीर्तिताः।
दरिद्रो व्याधितो मूर्खः प्रवासी नित्यसेवकः।।

(८)

अहो ? दुर्जनसंसर्गान्मानहानिः पदे पदे।
पावको लोहसंगेन मुद्गरैरभिहन्यते।।

(९)

सर्वे यत्र विनेतारः सर्वे पण्डितमानिनः।
सर्वे महत्वमिच्छन्ति कुलं तदवसीदति।।

(१०)

सुलभाः पुरुषा राजन्! सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

(११)

रोगी चिरप्रवासी परान्नभोजी परावसथशायी।
यज्जीवति तन्मरणं यन्मरणं सोऽस्य विश्रामः।।

(१२)

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः,
स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः।।

(१३)

स्थान भ्रष्टा न शोभन्ते
दन्ताः केशाः नखाः नराः।

इति सञ्चित्य मतिमान्
स्वस्थानं न परित्यजेत् ।।

(१४)

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ।
कालो न यातो वयमेव याताः
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ।।

(१५)

मुक्ताफलैः किं मृगपक्षिणां च,
मिष्टान्नपानं किमु गर्दभानाम् ।
अन्धस्य दीपो बधिरस्य गीतं
मूर्खस्य किं शास्त्रकथाप्रसंगः ।।

★

पाठ १२

संस्कृत लोकोक्तियाँ

१. चेतः शुद्धौ स्वस्थताधिगमः ।

अर्थ–मन के प्रसन्न रहने पर स्वास्थ्य ठीक रहता है ।

प्रयोग:–रुचिराणि भोजनानि भुंजानोऽपि सः कृशः एव, यतश्चेतः शुद्धौ स्वस्थताधिगमः ।

२. चन्दनतरुर्वासयति कुठारं स्वनिपातकम् ।

अर्थ–सज्जन अपने शत्रु का भी भला करते हैं ।

प्रयोग:–सज्जनास्तपर्यन्ति शत्रूनपि, यतश्चन्दनतरुर्वासियति कुठारं स्वनिपातकम् ।

३. चिरन्तनोपद्रवी न विरतो दृश्यते ।

अर्थ–पुराना पापी पाप करने से नहीं चूकता ।

प्रयोग:–श्वपुच्छ नलिकाधृतमपि वक्रमेव भवति, चिरन्तनोपद्रवी न विरतो दृश्यते ।

४. छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवन्ति ।

अर्थ–गरीबी में आटा गीला या विपत्ति कभी अकेली नहीं आती ।

प्रयोग:–तस्य पितरि मृते माताऽपि तमेवानुससार, सत्यं छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवन्ति ।

५. छलं छलानुबन्धि स्यात् ।

अर्थ–एक पाप के लिए दूसरा पाप करना पड़ता है ।

प्रयोग–मद्यपोऽसौ स्तेयमनुतिष्ठति । सत्यमेव छलं छलानुवन्धि स्यात् ।

६. गर्दभः पूर्वदेशीयः रेभते पश्चिमैः स्वरैः ।

अर्थ–पूर्व देश का गधा पश्चिम के स्वर में चिल्लाता है ।

प्रयोग:–ग्राम्यस्त्रियोऽपि न कुर्वन्ति अवगुण्ठनं तदिदं तथैव यथा गर्दभः पूर्वदेशीयः रेभते पश्चिमैः स्वरैः ।

७. अये कथमनभ्रा वृष्टिः ।

अर्थ–अरे, यह बिना वादलों की वर्षा कैसी ?

प्रयोग:–देवोऽपि मय्यनुग्रहं करोति, यो विप्रकृतोऽभूदिति नूनमनभ्रा वृष्टिः ।

८. अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः ।

अर्थ–अन्धों को मानो नेता भी अन्धा मिल गया हो ।

प्रयोग:–अयं रामकृष्णः सदस्यान् धीहीनान् यथाभिलषितं नर्तयति तच्चैतदेवं विभाति यथा अन्धेन पुंसा अन्धा एव नीयमानाः भवेयुः ।

९. अप्रतिषिद्धमनुमतं भवति ।

अर्थ–विरोध न करने का अर्थ स्वीकार करना होता है ।

प्रयोगः–मया प्रोक्तं अद्याहं शीनामयं (सिनेमा) गमिष्यामि तदा पित्रा न प्रतिषिद्धोऽस्मि, तेन तेषामत्रार्थेऽनुमतिः सम्भाव्यते यतः–अप्रति०.... ।

१०. अङ्गीकृतं सुकृतिनो न परित्यजन्ति । -

अर्थ–भले लोग हाथ में लिया हुआ कार्य अधूरा नहीं छोड़ते ।

प्रयोगः–राज्यनाशेऽपि हरिश्चन्द्रः सत्यं न तत्याज; यतः–अंगीकृतं० ।

११. अतिदीर्घोऽपि कर्णिकारो न मुसली ।

अर्थ–धतूरे का वृक्ष चाहे कितना ही बड़ा हो जाय, किन्तु उसकी लकडी मुसलों के काम नहीं आती ।

प्रयोगः–केवलमाकारमात्रेण महानपि नायं करी; यतः–अति दीर्घोऽपि० ।

१२. अल्पेन सिद्धे महति न यत्नमनुतिष्ठति ।

अर्थ–जब थोडे से काम बन जाये तो बड़ा प्रयत्न कौन करे ?

प्रयोगः–ऋणं तेन स्वसम्बन्धिनः सकाशात् गृहीतमिति श्रेष्ठिनं नोपययौ, यतोऽल्पेन० ।

१३. अवयवशक्तेः समुदायशक्तिर्बलीयसी ।

अर्थ–अवयव की शक्ति से समुदाय की शक्ति अधिक होती है ।

प्रयोगः–एकाकी न किंचित् कर्तुमलं कश्चित् तृणरज्जुर्बध्नाति करिणं, यतोऽवयवशक्तेः ।

१४. **अशक्तोऽहं गृहारम्भे शक्तोऽहं गृहभञ्जने।**

अर्थ–रचनात्मक कार्य बहुत कठिन है; किन्तु ध्वंसात्मक अति सरल।

प्रयोग:–स हि सर्वेषामपकरोति; यतः सः नीचो वदति अशक्तोऽहं गृहारम्भे शक्तोऽहं गृहभञ्जने।

१५. **अर्थो हि लोकेषु बन्धुः।**

अर्थ–संसार में धन ही मनुष्य का वन्धु है।

प्रयोग:–सर्वे हि धनवान्धवः तत एवार्थो हि लोके वन्धुः।

१६. **अग्निर्हिमस्य भेषजम्।**

अर्थ–शीत का उपचार अग्नि है।

प्रयोग:–तेन तस्य प्रतीकाराय तदाश्रयः साध्वेव विहितः, यतोऽग्निर्हिमस्य भेषजम्।

१७. **अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः।**

अर्थ–यह और आपत्ति पर आपत्ति आ पड़ी।

प्रयोग:–भ्रातृमरणेऽपि दैवं नातुष्यद् यतो भगिन्यपि मरणशय्यामधितिष्ठति, तदयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः।

१८. **अजा सिंहप्रसादेन वने चरति निर्भयम्।**

अर्थ–बकरी भी सिंह की कृपा होने पर जंगल में निर्भय होकर घूमती है।

प्रयोग:–महतामाश्रयेण नीचोऽप्युच्चैर्वदति; यतो अजा सिंहप्रसादेन वने चरति निर्भयम्।

१९. अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति ।

अर्थ–बुरा मार्ग ग्रहण करने पर सगा भाई भी छोड़ देता है ।

प्रयोगः–दुर्वृत्तस्य तस्य परित्याग एव श्रेयान्; यतः अपन्थान तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति ।

२०. अम्बुनो बिन्दुरल्पोऽपि शुक्तौ मुक्ताफलं भवेत् ।

अर्थ–पानी की एक बूंद भी सीप में पड जाय तो मोती बन जाती है ।

प्रयोगः–संसर्गात् उन्नतिर्जायते; यतोऽम्बुनो बिन्दुरल्पोऽपि ।

★

परिशिष्ट

इदम् (पुल्लिङ्ग) = यह

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
अयम्	इमौ	इमे	प्रथमा
इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्	द्वितीया
अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः	तृतीया
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	चतुर्थी
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	पञ्चमी
अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्	षष्ठी
अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु	सप्तमी

इदम् शब्द के (स्त्रीलिङ्ग के) प्रथमा के द्विवचन का रूप इमे तथा द्वितीया के द्विवचन के इमे, एने बनेंगे।

शेष विभक्तियों में द्विवचन के रूप स्त्रीलिङ्ग के समान होंगे।

ईकरान्त स्त्रीलिंगी 'नदी' शब्द

नदी	नद्यौ	नद्यः	प्रथमा
नदीम्	नद्यौ	नदीः	द्वितीया
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	तृतीया
नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	चतुर्थी
नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	पंचमी
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्	षष्ठी
नद्याम्	नद्योः	नदीषु	सप्तमी
नदी	नद्यौ	नद्यः	सम्बोधनम्

ऋकारान्त (पुल्लिङ्ग) 'कर्तृ' शब्द

कर्ता	कर्तारौ	कर्तार:	प्रथमा
कर्तारम्	कर्तारौ	कर्तॄन्	द्वितीया
कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभि:	तृतीया
कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्य:	चतुर्थी
कर्तु:	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्य:	पञ्चमी
कर्तु:	कर्त्रो:	कर्तॄणाम्	षष्ठी
कर्तरि	कर्त्रो:	कर्तृषु	सप्तमी
कर्त:	कर्तारौ	कर्तार:	सम्बोधनम्

राजन् (पुल्लिङ्ग) के रूप

राजा	राजानौ	राजान:	प्रथमा
राजानम्	राजानौ	राज्ञ:	द्वितीया
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:	तृतीया
राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य:	चतुर्थी
राज्ञ:	राजभ्याम्	राजभ्य:	पंचमी
राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्	षष्ठी
राज्ञि, राजनि	राज्ञो:	राजसु	सप्तमी
राजन्	राजानौ	राजान:	सम्बोधनम्

क्रियापदों के आज्ञार्थ रूप

भू=होना

भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्रथम पुरुष
भव	भवतम्	भवत	मध्यम पुरुष
भवानि	भवाव	भवाम	उत्तम पुरुष

इसी प्रकार पत्, पठ्, वद् आदि क्रियापदों के रूप भी चलेंगे।

क्रियापदों के विध्यर्थ रूप (आत्मनेपद)

भाष्=बोलना

भाषेत्	भाषेयाताम्	भाषेरन्	प्रथम पुरुष
भाषेथा:	भाषेयाथाम्	भाषेध्वम्	मध्यम पुरुष
भाषेय	भाषेवहि	भाषेमहि	उत्तम पुरुष

आस्=बैठना

आसीत्	आसीयाताम्	आसीरन्	प्रथम पुरुष
आसीथा:	आसीयाथाम्	आसीध्वम्	मध्यम पुरुष
आसीय	आसीवहि	आसीमहि	उत्तम पुरुष

इसी प्रकार अन्य क्रियापदों के रूप भी होंगे।

★

दो शब्द

दिनांक ११ मई १९५१ ई. को इतिहासप्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर की पुन: प्रतिष्ठापना का समारम्भ हुआ था, जो भारत के लिए एक विशेष गौरव की घटना थी।

स्वर्गीय सरदार पटेल की एक महान् कल्पना उस दिन साकार हुई थी। राष्ट्र के श्रद्धाभाजन स्व. राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने इस समारम्भ में प्रमुख पद ग्रहण किया था। माननीय श्री कन्हैयालाल मुन्शीजी इस अनुष्ठान के प्रमुख सूत्रधार थे तथा समादरणीय श्री ढेबरजी उसके स्वागताध्यक्ष थे। राष्ट्र की इन विभूतियों ने मिलकर भारतीय इतिहास में उस दिन एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ा था।

इसी पावन अवसर पर वहाँ 'संस्कृत विश्व परिषद्' की स्थापना हुई। परिषद् के चतुर्थ अधिवेशन में यह निश्चय हुआ कि संस्कृत की सरल परीक्षाएँ आरम्भ की जावें। तदनुसार एक पाठ्यक्रम समिति निर्धारित की गई, जिसके सदस्य इस प्रकार निर्वाचित हुए :–

१. श्रीयुत ज. ह. दवे, प्रधानमन्त्री सं. वि. परिषद्
२. प्रा. ह. दा. वेलणकरजी
३. डॉ. ए. डी. पुसाळकरजी
४. आचार्य दीक्षितारजी
५. प्रा. अनन्त शास्त्री, फडकेजी
६. प्रा. महेशचन्द्र शास्त्री, परीक्षामन्त्री

समिति के सदस्यों ने मिलकर जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया, तदनुसार ये पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं।

हमें आशा है कि ये पाठपुस्तकें खूब लोकप्रिय होंगी तथा इन्हीं पाठ्य-पुस्तकों की सहायता से 'संस्कृत विश्व परिषद्' के लिए 'भारतीय विद्या भवन' द्वारा संचालित परीक्षाओं का भी अधिकाधिक प्रचार होगा।

पाठ्यक्रम समिति के सदस्यों का हम आभार मानते हैं, जिन्होंने अपना अमूल्य सहयोग इस कार्य में दिया।

जयंतकृष्ण हरिकृष्ण दवे

प्रधानमन्त्री सं. वि. प.

२२-५-५६ तथा मानार्ह नियामक भा. वि. भ.

प्रकाशक

सु. रामकृष्णन्
भारतीय विद्या भवन,
चौपाटी पथ, बम्बई-७

प्रथम संस्करण	२०,०००	सन्	१९५६
द्वितीय संस्करण	२०,०००	सन्	१९५७
तृतीय संस्करण	५,०००	सन्	१९५९
चतुर्थ संस्करण	१०,०००	सन्	१९५९
पंचम संस्करण	५,०००	सन्	१९६१
षष्ठ संस्करण	५,०००	सन्	१९६३
सप्तम् संस्करण	१०,०००	सन्	१९६६
अष्टम् संस्करण	१५,०००	सन्	१९६९
नवम संस्करण	१०,०००	सन्	१९८२
दशम संस्करण	५,०००	सन्	१९८४
एकादश संस्करण	१०,०००	सन्	१९८४
द्वादश संस्करण	२५,०००	सन्	१९८५

मुद्रक

वी. वरदराजन्
असोसिएटेड अॅडव्हर्टाइझर्स अॅण्ड प्रिन्टर्स,
५०५, ताडदेव आर्थर रोड, बम्बई-३४